Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

UNIT – III
यूरोप में आर्थिक विकास

पूँजीवाद का उदय : कृषि से उद्योग तक का आर्थिक संक्रमण

मर्केंटिलिज़्म की नीति और व्यापारिक पूँजी के संचय ने यूरोप में एक नए आर्थिक ढाँचे के विकास की पृष्ठभूमि तैयार की, जिसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था कहा जाता है। पूँजीवाद केवल एक आर्थिक प्रणाली नहीं था, बल्कि यह उत्पादन, श्रम, संपत्ति और समाज के संगठन का एक बिल्कुल नया तरीका था। इस व्यवस्था में उत्पादन का उद्देश्य आत्मनिर्भरता या उपभोग नहीं, बल्कि लाभ अर्जन बन गया। इसी परिवर्तन ने यूरोप के आर्थिक इतिहास में एक निर्णायक मोड़ उत्पन्न किया।

पूँजीवाद के विकास में कृषि क्षेत्र में हुए परिवर्तनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। इंग्लैंड में एन्क्लोज़र आंदोलन के माध्यम से सामूहिक भूमि को निजी संपत्ति में परिवर्तित कर दिया गया। इससे छोटे किसान अपनी भूमि से वंचित हो गए। जिन किसानों के पास उत्पादन के साधन नहीं बचे, वे जीविका की तलाश में नगरों की ओर पलायन करने लगे। इस प्रक्रिया ने एक विशाल मजदूर वर्ग का निर्माण किया, जो अपनी श्रम-शक्ति बेचने के लिए विवश था।

शहरों में पूँजीपति वर्ग का उदय हुआ, जिसने कारखानों, मशीनों और कच्चे माल पर नियंत्रण स्थापित किया। उत्पादन अब छोटे कुटीर उद्योगों के बजाय बड़े पैमाने पर कारखानों में होने लगा। श्रम विभाजन, समय अनुशासन और मशीन आधारित उत्पादन पूँजीवादी व्यवस्था की

पहचान बन गए। श्रमिकों को निश्चित मजदूरी दी जाती थी, जबकि उत्पादन से होने वाला लाभ पूँजीपति वर्ग के पास जाता था।

पूँजीवाद ने बैंकिंग, ऋण, बीमा और शेयर बाज़ार जैसी संस्थाओं को जन्म दिया। इन संस्थाओं ने पूँजी संचय और निवेश को बढ़ावा दिया। इससे औद्योगिक विकास को गति मिली, लेकिन साथ ही सामाजिक असमानताएँ भी गहराने लगीं। एक ओर संपन्न पूँजीपति वर्ग था, तो दूसरी ओर अत्यंत निर्धन श्रमिक वर्ग।

इस प्रकार पूँजीवाद ने यूरोप को आर्थिक दृष्टि से गतिशील बनाया, लेकिन यह विकास असमान और संघर्षपूर्ण था।